प्रोक्ति विज्ञान

*डॉ. श्रीमती शोभना जैन

भाषाविज्ञान मैं भाषा से सम्बद्ध सभी विषय आते हैं। इन अलग–अलग विषयों (जैसे ध्वनिविज्ञान,वाक्य विज्ञान,रुप विज्ञान आदि) को 'भाषाविज्ञान' की शाखाएँ कहा जाता हैं। इन्हे 'भाषा के अध्ययन के विभाग' भी कहा जा सकता हैं। इन शाखाओं (विभागो) मैं कुछ तो मुख्य हैं तथा कुछ गौण। जैसे : प्रोक्तिविज्ञान, वाक्यविज्ञान, रुपविज्ञान, ध्वनिविज्ञान,अर्थविज्ञान। लिपिविज्ञान,भाषा उत्पत्ति,भाषाओं का वर्गीकरण,भाषा–भूगोल,भाषाकालक्रम विज्ञान,भाषा पर आधारित प्रागैतिहासिक खोज,शैलीविज्ञान,सर्वेक्षण–पद्धति भूभाषाविज्ञान।

किसी बात को कहने के लिए प्रयुक्त वाक्यों के उस समुच्चय को 'प्रोक्ति' कहते हैं। जिसमैं एकाधिक वाक्य आपस मैं सुसंबद्ध होकर अर्थ और संरचना की दृष्टि से एक इकाई बन गए हैं। अंग्रेजी का एक पुराना शब्द है 'डिस्कोर्स' उसी को अब अंग्रेजी मैं इस शब्द का अर्थ मान लिया गया है। इसी के एक प्रतिशत के रुप मैं,हिन्दी मैं 'प्रोक्ति' शब्द का प्रयोग हो रहा है। प्रोक्ति के अध्ययन के लिए हिन्दी मैं प्रोक्तिविज्ञान शब्द डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा दिया गया हैं। 'डिस्कोर्स' के अध्ययन के लिए अंग्रेजी मैं भी कोई शब्द नहीं है उसके लिए इन्होने 'डिस्कोर्सालाजी' नाम का सुझाव दिया। पहले प्रोक्ति की सत्ता की ओर न तो हमारे वैयाकरणों का ध्यान रहा है, न पुराने और नए भाषाशास्त्रियों का। इसलिए भाषा की मूलभूत सहज इकाई वाक्य को ही कहा गया तथा व्याकरण और भाषाविज्ञान दोनो ही मैं वाक्य के आधार पर ही भाषा का विश्लेषण किया गया। भारतीय काव्यशास्त्री अपवाद है जिन्होने प्रोक्ति के लिए 'महावाक्य' का प्रयोग आज से कई सौ वर्ष पहले किया था। इस प्रकार उनके मन मैं इसकी संकल्पना तो थी (वाक्योच्चयो वमहावाक्यम्–विश्वनाथ 'साहित्य–दर्पण' मैं) किन्तु वे इसे मूल न मानकर वाक्यबन्ध–जैसा मानते थे। इस तरह उनमैं भी मूल इकाई 'वाक्य' को ही मानने का संकेत है। यदि उसे मूल मानते तो 'महावाक्य' न कहकर कुछ ऐसा नया नाम देते जिसमैं वाक्य शब्द न होता। समाजभाषाविज्ञान के विकास के कारण इस ओर लोगो का ध्यान अब गया है। अर्थ और संरचना की दृष्टि से विचार करने पर प्रोक्ति ही भाषा की मूलभूत सहज इकाई है क्योंकि समाज मैं विचार–विनिमय के लिए उसी (प्रोक्ति) का प्रयोग किया जाता है तथा वाक्य उसी का विश्लेषण करने पर प्राप्त होते है, अतः वाक्य मूलतः भाषा की सहज इकाई नहीं हो सकते। 'लंका का अत्याचारी राजा रावण अयोध्या के राजकुमार राम की पत्नी सीता को उठाकर अपने रथ पर बैठाकार ले गया। पता चलने पर राम और उनकी सेना ने उस पर चढ़ाई की। युद्ध मैं रावण–पक्ष के काफी लोग मारे गए। अन्त मैं वही हुआ जो होना था, 'राम ने रावण को बाण से मारा और रावण वीरगति को प्राप्त हुआ।' यह एक प्रोक्ति है जिसमैं कई वाक्य हैं, जैसे–' युद्ध मैं रावण–पक्ष के काफी लोग मारे गए' या 'राम ने रावण को बाण से मारा ' आदि। ये सभी वाक्य आपस मैं सुसंबद्ध है। ' प्रोक्तिविज्ञान ' भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसमैं प्रोक्ति का अध्ययन–विश्लेषण किया जाता है।

विश्व–विज्ञान मैं 'प्रोक्ति' की दृष्टि से भाषा का अध्ययन–विश्लेषण अपेक्षाकृत बहुत नई चीज है। भारत मैं भी और यूरोप मैं भी अभी हाल तक भाषा की सहज और बृहत्तम इकाई वाक्य मानी जाती रही है और ध्वनि,अक्षर,शब्द, पद पर विचार करते–करते हमारा अध्ययन–विश्लेषण वाक्य पर आकर समाप्त होता जा रहा है। इसीलिए ध्वनिविज्ञान (Phonetcs तथा Phonology), रुपविज्ञान (Morphology) तथा वाक्यविज्ञान (Syntex), ये तीन ही भाषाविज्ञान के मुख्य विभाग माने जाते रहे हैं। इधर पश्चिम मैं कुछ समय से प्रोक्ति रुप मैं भाषा विश्लेषण होने लगा है,किन्तु अभी तक इस अध्ययन को न तो भारत से बाहर और न भारत मैं ही कोई नाम देने का प्रयास हुआ है। प्रस्तुत पंक्तियों को लेखक इस अध्ययन को 'प्रोक्तिविज्ञान' कहने का सुझाव देना चाहता है। यदि ध्वनि,रुप और वाक्य के अध्ययन क्रमशः ध्वनिविज्ञान, रुपविज्ञान और वाक्यविज्ञान है तो प्रोक्ति के अध्ययन के लिए 'प्रोक्तिविज्ञान' नाम को अनुपयुक्त नहीं कहा जा सकता। अंगेजी मैं भी इसके अध्ययन के लिए कोई स्वतंत्र नाम नहीं है।

अंगेजी 'डिस्कोर्स' के लिए 'प्रोक्ति' शब्द का प्रयोग हिन्दी मैं 1980 से ही विशेष रुप से चला। 1980 मैं ही रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव,बालगोविन्द मिश्र तथा भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक ' हिन्दी का शैक्षिक व्याकरण ' प्रकाशित हुई थी जिसमैं प्रोक्ति पर लगभग पैंतीस पृष्ठों का एक पूरा खण्ड था।

इस विशेष अर्थ मैं प्रोक्ति(प्र+उक्ति) शब्द अंग्रेजी 'डिस्कोर्स' के लिए हिन्दी मैं बनाया गया एक नया शब्द है। 'डिस्कोर्स' अंग्रेजी का सामान्य अर्थ (बातचीत, भाषा, तर्कशक्ति, लेख, भाषण तथा वार्ता आदि) मैं तो काफी पुराना शब्द है, किन्तु इस विशिष्ट अर्थ मैं वह इस सदी के प्रथम चरणांत मैं ही प्रयोग मैं आना शुरु हुआ।

' प्रोक्ति ' या 'डिस्कोर्स' के कुछ अन्य नाम या संकेत

'डिस्कोर्स' के लिए कई अन्य शब्दो व शब्दबंधो का भी प्रयोग मिलता है। जैसे सस्यूर भाषा को वाक्य तक सीमित नहीं रखते। वे उसे मैं–तुम के प्ररिप्रेक्ष्य मैं देखते है। 'कहना' उनके अनुसार भाषा नहीं,, ' बातचीत करना ' भाषा है। (Language is not speaking but talking) और 'डिस्कोर्स' यह बातचीत ही है। ग्लीसन इसे Upward extension of sentence कहते है। हैरिस ने इसी को 'डिस्कोर्स' कहा है, तो हैलिडे ने टेक्स्ट (पाठ) कहा है। कुछ लोग 'डिस्कोर्स' और 'टेक्स्ट' मैं यह अन्तर मानते है कि जो 'बातचीत होती है, वह 'डिस्कोर्स, है तथा उसी का लिखित रुप 'टेक्स्ट' या पाठ है। आस्टिन इसे 'स्पीच ऐक्ट' (भाषिक क्रिया) कहते है तो हाइन्स 'स्पीच इवेंट' (भाषिक घटना)। इस प्रकार ये लोग भाषा को वाक्य तक सीमित नहीं मानते,जो वास्तव मैं ठीक है।

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय सारनी जिला-बैतूल (म.प्र.)

भाषा मैं इस संकल्पना की प्राचीनता

भारत के लिए प्रोक्ति की संकल्पना बिल्कुल नई नहीं है। विश्वनाथ के साहित्य–दर्पण मैं 'महावाक्य' प्रायः इसी को कहा है। वे कहते हैं 'वाक्योंच्चयो महावाक्यम्', अर्थात् ' वाक्यो के उच्चय को महाकाव्य कहते हैं'। ' उच्चय मूलतः 'उद्+चय' है, अर्थात एक के ऊपर का चुना हुआ। इस प्रकार विश्वनाथ के अनुसार 'वाक्यों का मात्र समूह' 'महाकाव्य' नहीं है। जैसे दीवाल मैं चुनी ईटे एक–दूसरे से पूरी तरह जुड़ी होती है, उसी प्रकार कई वाक्य पूरी तरह एक दूसरे से मिलकर महाकाव्य की रचना करते हैं। साहित्यदर्पणकार ने आगे महाकाव्य की संरचना को स्पष्ट करते हुए लिखा है–

स्वार्थबोधे समाप्तानामंगांगित्वव्यपेक्षया।
वाक्यानामैंकवाक्यत्वं पुनःसंहत्य जायते।

अर्थात्, महाकाव्य के घटक प्रत्येक वाक्य का अपना–अपना अर्थ होता है,किन्तु वे जब एक दूसरे से अंगांगीभाव से मिलते है,तो मिलकर समवेतः एक अर्थ देते है तथा उनमैं एकवाक्यत्व आ जाता है,अर्थात वे संरचना और अर्थ के स्तर पर एक इकाई हो जाते है।

वस्तुतः प्रोक्ति (डिस्कोर्स) के परिभाषा–स्वरुप इस सदी मैं पश्चिम मैं और पूर्व मैं जो कुछ भी कहा गया है, उसे कई सौ वर्ष पूर्व साहित्यदर्पणकार कह चुके है।

प्रोक्ति

तर्कपूर्ण क्रमयुक्त और आपस मैं आन्तरिक रुप से सुसंबद्ध,एकाधिक वाक्यों की ऐसी व्यवस्थित इकाई को प्रोक्ति कहते है जो सन्दर्भ–विशेष मैं अर्थद्योतन की दृष्टि से पूर्ण हो। अर्थात् –

1) प्रोक्ति मैं एक से अधिक वाक्य होते है।
2) इन वाक्यों का क्रम तर्कपूर्ण होता है।
3) ये आन्तरिक रुप से आपस मैं सुसंबद्ध होते है।
4) ये वाक्य,आपस मैं मिलकर, संदर्भ–विशेष मैं अर्थ की दृष्टि से पूर्ण होते है।
5) ये वाक्य तर्कपूर्ण क्रमयुक्ता, आपस मैं सुसंबद्धता तथा अर्थद्योतन की दृष्टि से पूर्णता के कारण एक इकाई के रुप मैं होते है।

वाक्यों की सुसंबद्ध ऐसी इकाई को प्रोक्ति कहते है जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो। इस प्रसंग मैं निम्नांकित बातें भी उल्लेखनीय है –

(क) प्रोक्ति मैं प्रायः एकाधिक वाक्य होते है, किन्तु कभी–कभी एक वाक्य की भी प्रोक्ति होती है, यद्यपि अपवादतः। जापानी मैं लिखे गए हाइकू मैं प्रत्येक एक प्रोक्ति है तथा कइयों मैं मात्र एक ही वाक्य होता है। अज्ञेय की एक प्रसिद्ध कविता को यदि 'साँप, तुम नगर मैं तो रहे नहीं, ,डसना कहाँ सीखा?' रुप मैं रखे तो यह भी एकवाक्यीय प्रोक्ति है। यों 'आ' एक ध्वनि भी है, एक अक्षर भी है, एक शब्द भी है, एक वाक्य भी है तथा अपवादतः कुछ स्थितियों मैं एक प्रोक्ति भी। इसी तरह अनेक लोकोक्तियाँ (जैसे 'एक और एक ग्यारह होते है' या 'एक हाथ से ताली नहीं बजती','सत्य कड़वा होता है,' 'लोहे को लोहा काटता है' यदि) भी एकवाक्यीय प्रोक्ति होती है। यह स्थिति सार्वभौमिक सत्य को व्यक्त करने वाले वाक्यों की भी होती है। उदाहरणार्थ 'सूरज पूरब से निकलता है' या 'दो और दो चार होते है' आदि।

(ख) प्रोक्ति के वाक्य ऊपरी तौर पर सुसंबद्ध हों या नहीं,,आंतरिक रुप मैं अवश्य सुसंबद्ध होते है। यों सामान्यतः तो प्रोक्ति के वाक्य बाह्यतः भी आपस मैं संबद्ध होते है, किन्तु कभी–कभी ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जब वाक्य आपस मैं ऊपरी तौर पर बिल्कुल भी जुड़े नहीं होते। जैसे 'सूरज डूब रहा है। आसमान लाल है। पशु दिन भर बाहर चर कर घर लौट रहे है।' इस प्रोक्ति मैं तीनों वाक्य बाहर से अलग–अलग हैं, किन्तु भीतर से जुड़े हैं, तीन बिन्बों के द्वारा।

(ग) प्रोक्ति अपने छोटे रुप मैं एक पैराग्राफ,एक छंद एक दृश्य (नाटक का) भी हो सकती है, एक अध्याय या अंक भी हो सकती है तथा अपने बृहत्तम रुप मैं एक पूरी कहानी,, पूरा उपन्यास, पूरा एकांकी या नाटक, पूरा निबन्ध, पूरी कविता, पूरा खण्डकाव्य या पूरा महाकाव्य भी।

(घ) प्रोक्ति मूलतः बातचीत है, इसीलिए वक्ता,श्रोता,कथ्य (संप्रेष्य या सन्देश), सन्दर्भ और मौखिक सरणि ये पाँच प्रोक्ति के घटक है। यदि वह लिखित या पाठ है तो पाँचवा घटक 'लिखित सरणि' होगा।

(ड.) प्रोक्ति का निर्णय आकार से नहीं प्रकार से होता है। जब तक उसमैं पूरी बात को कहने की क्षमता न हो, बड़ी या छोटी होने के आधार पर उसे प्रोक्ति नहीं कहा जा सकता।

(च) प्रोक्ति मूलतः संप्रेषण 'प्रत्येक अध्याय' तथा प्रत्येक अध्याय की अभिव्यक्ति की दृष्टि से पूर्ण पैराग्राफ',– ये सभी प्रोक्ति हैं किन्तु 'उपन्यास की पूर्णता' तथा 'अध्याय की पूर्णता' और अध्याय के एक पैराग्राफ की पूर्णता' एक प्रकार की नहीं हो सकती।

(छ) कभी–कभी वाक्य अनेकार्थी होता है,किन्तु प्रोक्ति उसे अनेकार्थी बना देती है। जैसे 'यह राम की तस्वीर है' के तीन अर्थ है, किन्तु 'यह राम की तस्वीर है' उसने कल ही खरीदा है' मैं एकार्थी है। उस वाक्य की यही स्थिति 'यह राम की तस्वीर है, कल ही उसने बनाई है' या 'यह राम की तस्वीर है, किन्तु उसके अपने चेहरे से इस तस्वीर का चेहरा कहीं अच्छा है' मैं भी है।

प्रोक्ति के प्रकार

प्रोक्ति का वर्गीकरण कई आधारो पर किया जा सकता है जिनमैं से कुछ मुख्य आधार इस प्रकार है :–

(क) **'प्रोक्ति क्या (कौन–सी विधा) है, अथवा किस विधा का अंश है'– इसके आधार पर** – इसके आधार पर उपन्यास, कहानी,, नाटक, एकांकी,, खण्डकाव्य, महाकाव्य, मुक्तक, गीत, निबन्ध, अथवा उपन्यास, नाटकांश, खण्डकाव्यांश, महाकाव्यांश, गीतांश तथा निबंधांश आदि भेद हो सकते है। कहना न होगा कि इन सब मैं संवादिता, एकालापता, वर्णनात्मकता आदि दृष्टियों से अन्तर होगा जो त्तवतः प्रोक्ति की प्रकृति से संबद्ध है।

(ख) **'प्रोक्ति के वाक्य आपस, मैं किस साधन के द्वारा जोड़े गए हैं'– इसके आधार पर** – इसके आधार पर समुच्चयी संसक्ति–युक्त सर्वनामी संसक्ति–युक्त, लोपी संसक्ति–युक्त विरामी संसक्ति–युक्त तथा संदर्भी संसंक्ति–युक्त आदि भेद हो सकते हैं। इनमैं प्रथम मैं संसक्ति समुच्चयबोधक अव्यय (जैसे तथा, एवं, ओर, कि, जो, जाकि, तो, इसलिए कि, यद्यदि....तथापि/पर/परन्तु/लेकिन, जो....तो, क्या.....क्या,

चाहे....परन्तु, पर/लेकिन/किन्तु/मगर, या ...या, न.....न,आदि) से होती है तो दूसरे मैं संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करके। ऐसे ही आगे कर्तालोप, संप्रदान लोप, कर्मलोप, क्रियालोप, विरामचिन्ह तथा सन्दर्भ्र आदि के द्वारा। यों सर्वाधिक प्रयोग 'मिश्र संसक्ति–युक्त' प्रोक्ति का होता है जिसमैं उपर्युक्त मैं एकाधिक (अर्थात् दो, तीन, चार या पॉच) साधनों का एक ही प्रोक्ति मैं प्रयोग होता है। मिश्र संसक्ति–युक्त प्रोक्ति को भी द्विसंसंक्तियुक्त, त्रिसंसक्तियुक्त, चतुरसंसक्तियुक्त, आदि उपभेदों मैं संसक्ति–साधनों के प्रकारों की अकुल संख्या के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। उल्लेख्य है कि 'संसंक्ति' का अर्थ होता है'पूरी तरह आपस मैं मिलकर एक इकाई बन जाना।

(ग) **'सम्बद्ध व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के आधार पर** – इसके आधार पर मुख्यतः **संलाप** (दो व्यक्तियों मैं बातचीत) तथा **एकालाप** (एक ही व्यक्ति अकेले मैं बोलता है। यह वक्ता भी होता है और श्रोता भी होता है) दो भेद होते है। फिर **संलाप** के **गत्यात्मक** (जिसमैं जल्दी–जल्दी वक्ता श्रोता बनता जाए तथा श्रोता वक्ता। अर्थात् वे बातचीत करते चलें,वक्ता–श्रौता रुप मैं अपनी भूमिकाएँ बदलते चले) तथा स्थिर (वक्ता बोलता जाए और श्रौता सुनता जाए) आदि उपभेद होते है फिर स्थिर के **द्वि–अभिमुख** (जैसे मंच के भाषण जिसमैं श्रौता सामने होता है) तथा **एकाभिमुख**(रेडियों से समाचार या वार्ता जिसमैं श्रोता सामने नहीं होता) उप–भेद होते है। **एकालाप** के भी स्थिर (जहाँ वक्ता के विचारों या भावों मैं स्थिरता हो), तथा **गत्यात्मक** (जहाँ विचार या भाव स्थिर न होकर बदलते रहें) उपभेद होते है।

(घ) **कथन के आधार पर** – इस आधार पर प्रोक्ति के **प्रत्यक्ष कथन** (डाइरेक्ट स्पीच) एवं **अप्रत्यक्ष कथन** (इनडाइरेक्ट स्पीच) भेद होते है।'राम–मैं तुम्हारा नाम जानना चाहता हूँ ? मोहन–मुझे मोहन कहते हैं' अप्रत्यक्ष कथन है। हिन्दी मैं एक प्रकार का कथन दोनो के बीच का भी होता है–'राम ने मोहन से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है तो मोहन ने बतलाया कि मैंरा नाम मोहन है' इसे अर्धप्रत्यक्ष कथन कह सकते है।

यों त्तवतः यह भी एक प्रकार से प्रत्यक्ष कथन ही है,क्योंकि प्रत्यक्ष कही गई बात यहाँ भी है। अन्तर केवल यह है कि इसमैं 'कि' भी है, जो सामान्यतः प्रत्यक्ष कथन मैं नहीं आता।

(ड) **कथन की प्रकृति के आधार पर–** इस आधार पर **विवरणात्मक** (जिसमैं विवरण हो), **व्याख्यात्मक** (जिसमैं व्याख्या हो), **मूल्यांकनपरक** (जिसमैं मूल्यांकन हो) तथा **मिश्र** (जिसमैं इन तीनों मैं कोई दो या तीनो हो) भेद हो सकते है। प्रोक्ति की प्रकृति के आधार पर आश्चर्यसूचक, प्रश्नसूचक, अनुभवाभिव्यक्तिक, **कथात्मक, प्रक्रियात्मक, उत्तेजक, प्रभावक, नाटकात्मक** आदि अन्य अनेक भेद भी विभिन्न सन्दर्भो मैं माने जा सकते हैं और माने गए है।

(च) **कथन–शैली के आधार पर** – इस आधार पर **रुढ़िगत** (जैसे, मैंरा विनम्र निवेदन है कि आप कृपया अपने यहाँ के रिक्त स्थानों मैं एक पर मैंरी नियुक्ति करने का कष्ट करे), **औपचारिक** (जैसे,अपने यहाँ के रिक्त स्थानों मैं एक पर मैंरी नियुक्ति करने की कृपा करें), **सामान्य** (जैसे, अपने यहाँ के रिक्त स्थानो मैं एक पर मैंरी नियुक्ति कर दे), तथा **अंतरंग** (जैसे, भाई, अपने यहाँ के रिक्त स्थानों मैं एक पर मैंरी नियुक्ति कर दो न) भेद किए जा सकते है। यों ये उदाहरण पूरी प्रोक्ति नहीं है, केवल स्पष्टीकरण के लिए यहाँ प्रोक्ति–अंश दिए गए है।

(छ) **प्रोक्ति मैं स्थान की दृष्टि से संसक्ति के आधार पर** – प्रोक्ति के विभिन्न घटकों मैं स्थान की दृष्टि से संसक्ति दो प्रकार की होती है–(क) **स्थानिक** (लोकल) **संसक्ति** तथा (ख) **सार्वत्रिक** (ग्लोबल) **संसंक्ति**।

(क) **स्थानिक संसक्ति** – इसमैं संसक्ति स्थान–विशेष पर होती है। इसके अंतर्गत अनेक प्रकार की संसक्तियाँ आती है जिनमैं से कुछ मुख्य है–

1) **सांकेतिक संसंक्ति** – इसमैं सर्वनामों (तुम,तुम्हारा,वह,उसका,आदि जो पीछे की किसी संज्ञा के लिए आते है (back reference) अथवा निर्देशको (यह,वह,इसी,,उसी,,इसी कारण,उसी कारण आदि) के आधार पर संसक्ति होती है।

2) **शाब्दिक संसक्ति** – इसमैं सर्वनामों, निर्देशकों तथा समुच्चयबोधको को छोडकर अन्य शब्दो के आधार पर संसक्ति होती है। इसके कई उपभेद है : (अ) **पुनरावृत्ति संसक्ति** – इसमैं पुनरावृत्ति (जैसे'संसार **घूम** रहा है। सूरज **घूम** रहा है। चन्द्रमा **घूम** रहा है। पृथ्वी **घूम** रही है। मैंरा मन **घूम** रहा है।) होती है।

(अ) **पर्यायिक संसक्ति** – यह संसक्ति पर्यायों पर आधारित होती है तुलसी की प्रसिद्ध चौपाई है–

बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहि सरीरा।।
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरै न पाव देह बिरहागी।।
(मानस,सुन्दरकांड)

(आ) **वैलोमिक संसक्ति** – यह विलोमों पर आधारित होती है। जैसे 'पुरुष कुतूहल और प्रश्न,स्त्री उत्तर' (स्कंदगुप्त)

(इ) **एकवर्गीय संसक्ति** – इसका आधार एक वर्ग के शब्द होते है। जैसे कॉपी है, किताब है, कलम है। 'नदी–नाव–नाविक–किनारा' या 'पर्वत–नदी–जंगल' मैं भी वही बात है।

3) **संयोजनी संसक्ति** – संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य इसके उदाहरण होते है। कई वाक्यों को एक मैं मिलाना भी यही है। जैसे–'राम गया, मोहन गया, श्याम गया, का 'राम, मोहन और श्याम गए।'

4) **समुच्चयबोधी संसक्ति** – इसमैं और, तथा, एवं, या, अथवा, परन्तु, किन्तु, लेकिन, पर, कि (जाना अच्छा होगा कि रुकना), तो (तुम्हे यह करना है तो मैं नहीं साथ दूँगा), यदि...तो, फिर, और फिर आदि का प्रयोग होता है।

5) **वैरामिक संसक्ति** – यह विराम–चिन्हों से होती है। जैसे पवित्रता की माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुःख, पुण्य की कसौटी है पाप। (स्कन्दगुप्त)

6) **पदलोपी संसक्ति** – इसमैं कर्ता (राम बहुत सवेरे उठता है बर्तन धोता है। खाना बनाता है। और खाकर स्कूल जाता है), **कर्ता तथा कर्म** (धीसू रद्दी कागज, प्लास्टिक के टुकडे तथा चिथडे आदि बटोरता हैं बाजार मैं ले जाता है बेचता है और तब अपना काम किसी तरह चलाता है), तथा

कर्ता तथा संप्रदान (मोहन को राम ने पैसे दिए। कपड़े दिए। किताबे दी। अब वह आराम से है।) तथा **क्रिया** (रामू बढ़ई दिन भर चीजें बनाता रहता है। मैंज, कुर्सी, स्टूल, आलमारी,, दरवाजे, खिड़कियाँ। पलंग, तख्त, पीढ़े आदि) का लोप करके संसक्ति की जाती है।

(ख) **सार्वत्रिक संसक्ति** – सन्दर्भ, तर्क, वातावरण, प्रतीक, चरित्र, कथ्य, कथा, एक भाव तथा उद्देश्य आदि मैं यह संसक्ति कृति मैं बिखरी होती है। उदाहरण के लिए **तर्क** : बिजली के नंगे तार छू गए। आग लग गई। सब जलकर स्वाहा हो गया। **वातावरण** : सूरज निकल रहा है। अँधेरा फट रहा है। चिड़ियाँ चहक रही है। किसान खेतों की ओर चल पड़े है। **प्रतीक** : काले बादल आ रहे है। अँधेरा होने वाला है। रोशनी का कहीं नाम नहीं। (यहाँ'काला','अँधेरा','रोशनी' सभी प्रतीक हैं)। **कथा** : कथासाहित्य, नाटक तथा खण्डकाव्य एवं महाकाव्य आदि मैं कथा पूरी कृति को एक मैं संसक्त कर उसे प्रोक्ति बनाती है। **चरित्र** : कहानी, उपन्यास,नाटक,तथा खण्डकाव्य एवं महाकाव्य को मुख्य चरित्र भी एक मैं बाँधने का काम करते है।

उपर्युक्त संसक्ति–साधनो मैं प्रयुक्त एक या मुख्य साधन के आधार पर विभिन्न प्रकार की प्रोक्तियों को (जैसे स्थानिक संसक्ति–युक्त प्रोक्ति, वैरामिक संसक्ति–युक्त प्रोक्ति) अलग–अलग नाम दिए जा सकते हैं। यदि कइयों का प्रयोग हो तो उसे इस दृष्टि मैं 'मिश्र' नाम से भी अमिहित किया जा सकता है।

प्रोक्ति की अशुद्धियाँ

प्रोक्तियों मैं कभी–कभी कुछ अशुद्धियाँ भी मिलती हैं जिनमैं से कुछ मुख्य ये है –

1) कभी तो 'यह' और इससे बनने वाले शब्दों तथा कभी 'वह' और उससे बनने वाले शब्दों का एक ही वस्तु या व्यक्ति के लिए प्रयोग। जैसे : कभी मैंने यह सोचने की कोशिश नहीं की कि उसकी भी जान है, इसे भी कोई चीज़ दुःख पहुचाती है, उसकी भी कुछ अभिलाषाएँ है।

2) ऐसे ही कभी–कभी प्रोक्ति के घटक–स्वरुप प्रयुक्त वाक्य आपस मैं उस रुप मैं पूरी तरह जुड़े नहीं होते कि वे सच्चे अर्थो मैं प्रोक्ति का निर्माण कर सकें। गलत समुच्चयबोधकों या अन्य शब्दों के प्रयोग के कारण ऐसा प्रायः देखने मैं आता है। उदाहरण के लिए, 'मैं चलता, अभी तो अँधेरा हो गया है, इसलिए जाना संभव नहीं होगा।' स्पष्ट ही एक तो 'अभी' के पहले 'किन्तु' या उसका कोई समानार्थी शब्द आना चाहिए था। दूसरे यहाँ 'अब' का प्रयोग होना चाहिए था,'**अभी**' का नहीं। ऐसे ही 'जभी चलना चाहो जभी चल सकते हो' जैसे प्रयोगो मैं दूसरा '**जभी**' निरर्थक है। या तो उसके स्थान पर '**तभी**' प्रयोग होना चाहिए। या फिर किसी भी शब्द का नहीं–'**जभी**' या जब भी चलना चाहो, चल सकते हो।'

3) ऐसे ही अस्पष्टता या अर्थ की एकाधिकता भी प्रोक्ति के लिए दोष है, यदि वह जान–बूझकर किसी प्रकार के सर्जनात्मक प्रयोगवश न लायी गयी हो। उदाहरण के लिए 'मैंने उससे कहा' + 'वह अपना नाम बताए' या 'वह मैंरा नाम बताएँ = 'मैंने उससे अपना नाम बताने को कहा।' इस वाक्य मैं 'अपना' स्पष्ट नहीं है कि वह किसके लिए आया है, वक्ता के लिए या वक्ता जिससे कह रहा है उसके लिए।

4) कभी–कभी प्रोक्ति मैं वाक्यों का क्रम भी गलत मिलता है। उदाहरण के लिए 'विद्यार्थी तड़के उठता है, व्यायाम करता है। हाथ मुँह धोकर पढ़ने बैठ जाता है। फिर नौ बजे खाना खाता है और स्कूल चला जाता है।' वाक्यों का यह क्रम ठीक है। यदि किसी भी वाक्य को पहले या पीछे कर दें तो क्रमदोष आ जायेगा।

5) ऐसे ही कार्य–कारण सम्बंध भी प्रोक्ति के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'मोहन के खाने मैं किसी ने कुछ मिला दिया था,खाते ही वह बेहोश हो गया और डॉक्टर के आने के पहले ही बेचारा चल बसा–इससे कार्य–कारण सम्बन्ध है। किन्तु 'राम की आँखें किसी ने फोड़ दी। पहले वह अंधा था, किन्तु आँख फोड़ देने से उसका अंधापन दूर हो गया और वह देखने लगा' मैं कार्य–कारण संबंध का अभाव है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि संदेश युक्त रचना के लिए प्रोक्ति शब्द का प्रयोग हिन्दी मैं किया जाता है। वाक्य और उक्ति मैं भी अन्तर है। शब्दों का व्याकरण सम्मत अथवा व्याकरण विचलित समुच्चय भी वाक्य हो सकता है और यह अर्थवान भी होता हे। वाक्य जब वक्ता, श्रोता और परिवेश के संदर्भो मैं अनुप्रमाणित होते है तब वे उक्ति कहलाते है तथा वाक्य श्रोता और परिवेश के संदर्भ का समुच्चय प्रोक्ति कहलाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1	भाषा विज्ञान	डॉ.भोलानाथ तिवारी	2006	किताब महल एजेंनसीज	528
2	प्रयोजन मूलक हिन्दी हरिमोहन बुधौलिया डॉ0 शशिप्रभा पाण्डेय	सं0डॉ0 विनय दुबे	2006	म0 प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी	100

सहायक ग्रंथ

3	सामान्य भाषा विज्ञान	बाबूराम सक्सेना	1971	हिन्दी सम्मैंलन प्रयाग	409
4	भाषा विज्ञान	बाबूराम दास	1995	इंडियन प्रेस प्रा0लि0 प्रयाग	292
5	भाषा – विज्ञान	भोलानाथ तिवारी	1996	किताब महल एजेनसीज	520

इलाहबाद

6	भाषा एवं भाषा विज्ञान	डॉ0 महावीर सरन जैन	लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद
7	आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत	डॉ0 रामकिशोर शर्मा	लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद
8	हिन्दी भाषादर्श	डॉ0 भागीरथ मिश्र	लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद
9	हिन्दी भाषा और नागरी लिपि	डॉ0 भोलानाथ तिवारी	लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद
10	हिन्दी भाषा और अर्न्तराष्ट्रीय संदर्भ	डॉ0 भोलानाथ तिवारी	कॉलेज बुक डिपो जयपुर
11	भाषा विज्ञान और इतिहास	डॉ0 महेश प्रसाद जयसवाल	म0 प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल